ISSN No. 2394-2878

Journal of Socio-Educational & Cultural Research

(An Interdisciplinary Refereed Journal)
Bi-Annual, Bilingual (English/Hindi)

Vol. 1, No. 2 **January-June 2015**

Editor in Chief
Dr. Alok Kumar Kashyap
Assistant Professor
Department of Sociology
M.B.S. P.G. College
Gangapur, Varanasi (U.P.)

Editor
Dr. Shivam Srivastava
Assistant Professor
Department of Education
Kisan P.G. College, Baharaich

Published by
ANJANI JAN SEVA SAMITI
VARANASI

Journal of Socio-Educational & Cultural Research

Editorial Board
Prof. K.U. Raut (Maharashtra)
Dr. O.P. Bhartiya (B.H.U.)
Dr. V.K. Lahari (B.H.U.)
Dr. Surendra Pal (Muzaffarnagar)
Dr. B.K. Singh (M.G.K.V.P., Varanasi)

Advisory Board
Prof. S.R. Yadav (B.H.U.)
Dr. Amita Mohan (U.S.A.)
Dr. B.B. Malik (Lucknow)
Dr. S. Yadav (Faizabad)
Dr. S.K. Pandey (Mugalsarai)
Dr. A.P. Singh (Uttarakhand)
Dr. P.K. Chaudhary (Bihar)
Dr. D.K. Singh (Jharkhand)
Dr. A.P. Singh (Jaunpur)

Joint Editor
Mahendra Kumar (Varanasi)
Umanath Patel (Varanasi)

Managing Editor
Narendra Singh (Lucknow)

Composed by
M. Computer, Lanka, B.H.U., Varanasi

Office : A-77, Anjanipuram Colony, Karmajitpur, Sunderpur, Varanasi
Cell : 8858229047, E-mail : alokkumar078@gmail.com
© Publisher

1. All views and opinions expressed in 'Journal of Socio-Educational & Cultural Research' are the sole responsibility of the author concerned. Neither the Editor nor Publisher can in anyway, be held responsible for them.
2. All post of journal are without pay.
3. All disputes are subject to Varanasi jurisdiction only.

सम्पादकीय

स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनायें! आजाद भारत के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले हमारे वीर शहीदों को नमन। हमारे देश का दो हजार सालों का इतिहास, दासता, दुर्घटनाओं, दमन व दुर्बलता का इतिहास है। इन दो हजार सालों में हम गिरने के अतिरिक्त कभी ऊँचाईयों पर नहीं चढ़ सके। गुलामी देखी है, अनेक प्रकार की दीनता एवं बहुत तरह की परेशानियाँ देखी हैं, गरीबी देखी है। इसके बावजूद भी हमारे पास भविष्य की ऐसी कोई योजना नहीं है कि हम यह सोच सकें कि आने वाला कल आज से बेहतर हो सकेगा। यदि देश के युवकों से पूछा जाए तो वह भी यही कहता हुआ मिलेगा कि कल और स्थिति बिगड़ जाने का डर है। रोज चीजें बिगड़ती चली जायेंगी, ऐसी हमारी सोच है। इस धारणा के पीछे कुछ कारण है।

हम पीछे यानि कि बीते हुए कल के चक्कर में पड़े हुए हैं। भारत में समय की जो धारणा है जो हमारा समय का क्रम है वह यह कहता है कि सबसे अच्छा युग बीत चुका। अब जो समय आने वाला है वह बुरा होगा और भी बुरा होता जायेगा। सतयुग बीत चुका, कलियुग चल रहा है, दिन प्रतिदिन स्थितियाँ खराब होती जायेंगी और हम अंधकार में डूबते चले जायेंगे। जो भी अच्छा था वह बीत गया। जो हमारे अच्छे श्रेष्ठ लोग थे वे आ के जा चुके। राम, कृष्ण, नानक, कबीर, बुद्ध, महावीर जो भी अच्छे लोग हो सकते थे वे बीते दिनों की बात हो चुके। अब भविष्य में अच्छे होने के कोई आसार नहीं दिखाई देते। ऐसी हमारी सोच है हम भूतकाल के सर्वोत्तम होने की सोच के साथ जी रहे हैं और भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

परन्तु यह निश्चित है कि यदि हम आने वाले समय में अच्छे लोग न पैदा कर पाए तो हमारे अतीत के अच्छे महापुरूष झूठे प्रतीत होने लगेंगे। अगर हमारा भविष्य श्रेष्ठता की सीढ़ियाँ न चढ़ सका तो हमारे अतीत की सारी उपलब्धियाँ छद्म होकर काल्पनिक कहानियों का रूप ले लेंगी। पुत्र अपने पिता की उपलब्धियों का सूचक होता है। अगर पुत्र गलत रास्ते पर चला जाए तो अच्छे पिता की बात सिर्फ मन भुलाने की बात रह जाती है। वह गवाही नहीं रह जाता। भविष्य तय करेगा कि हमने अतीत में राम को पैदा किया या नहीं। अगर हम भविष्य में राम से श्रेष्ठ महापुरूष पैदा कर सके तो हमारे राम सच्चे साबित होंगे।

हम अपने अतीत को देखें, यह उपयोगी हो सकता है लेकिन अतीत की आँख में रहना खतरनाक है। आँखों में तो आने वाला कल होना चाहिए। भविष्य होना चाहिए। जो बीत गया वह कल था। उसकी धूल उड़ चुकी है। अब जमीन पर कहीं खोजने से उसे ढूँढ़ा नहीं जा सकता है अब जिस रास्ते पर हम चल चुके हैं, वह रास्ता समाप्त हो गया है और उस रास्ते पर बने

हुए चरण चिन्ह अब कहीं भी नहीं खोजे जा सकते हैं। जीवन आकाश में उड़ते हुए पक्षियों की कहानी है।

यदि हम किसी पक्षी की पीछा करें तो उसके पैरों के कोई चिन्ह नहीं छूटते हैं, कहीं भी पक्षी उड़ जाता है, पीछे आकाश खाली हो जाता है। जिन्दगी में कहीं कोई चिन्ह नहीं छूटते। जिन्दगी में सब विस्मृत हो जाता है। जीवन तो प्रमाण मांगता है, आज को, वर्तमान को। आज कम क्या हैं? यही प्रमाण होता है। आइए हम अपने उटोपिया को पास्ट ओरिएनटेड से मुक्त करें, वर्तमान को संवारे। श्रम करें, सृजन करें। सिर्फ पीछे की बातें करते रहेंगे तो निर्मित कौन करेगा? हमारी पावन उर्वर भूमि में अनन्त सम्भावनायें हैं। अभी हमारा सर्वोत्तम आना बाकी है। दूसरों से श्रम एवं सृजन की उम्मीद करना छोड़, हम सभी को स्वयं ही श्रम एवं सृजनशील बनना होगा। यदि सभी अपने भीतर की ओर झाँकना प्रारम्भ कर आत्म सुधार के लिए संकल्पित हों तो निश्चय ही हमारे बलिदानियों की कुर्बानी व्यर्थ नहीं जायेगी।

(डॉ0 शिवम् श्रीवास्तव)
सम्पादक

विषय–सूची

		पृष्ठ संख्या
1.	Teaching Profession *"A Paradigm & an Acquaintance of our attitude"* **Dr. Surendra Pal**	1-8
2.	The Impact of Environmental changes on Indian Family System **Dr. Satya Prakash**	9-14
3.	A Study Of Administrative Effectiveness Among Secondary School Principals In Bahraich District **Nand Kumar Shukla & Dr. Som Veer Singh**	15-18
4.	अनुसूचित जातियों में बालश्रम की समस्या : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन **डॉ0 अमित मलिक**	19-22
5.	भारतीय चिकित्सालय संगठन में चिकित्सक रोगी के बीच सम्बन्ध का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन **डॉ0 अमरेश जायसवाल**	23-26
6.	स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता का अध्ययन **डॉ0 काव्या दुबे एवं रमा देवी**	27-36
7.	भारत में बाल–श्रम की समस्याः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन **डॉ0 मनोज कुमार मिश्र**	37-40
8.	भारत में नारी असमानता का विश्लेषण प्राचीन काल से स्वतंत्रा प्राप्ति तक **डॉ. नरेन्द्र प्रताप गुप्ता**	41-46
9.	प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन **डॉ0 निशा अग्रवाल एवं सुशील कुमार सिंह**	47-54
10.	लोकतन्त्र और चुनाव सुधार **डॉ. प्रदीप कुमार सिंह**	55-58
11.	जैन मूर्तिशास्त्र के सिद्धान्त **डॉ0 रामराज**	59-64
12.	प्राचीन भारतीय षाड्गुण्य नीति की वर्तमान में प्रासंगिकता **डॉ0 (श्रीमती) संजू**	65-70

13.	पाकिस्तान की परमाणु नीति ब्लेकमेल की नीति है **डॉ0 शमीम राइन**	71-74
14.	विनोबा भावे : सर्वोदय एवं त्रिसूत्री शिक्षण **डॉ0 शिखा वर्मा**	75-80
15.	बालिकाओं की मानसिक योग्यता एवं शैक्षिक उपलब्धि : एक अध्ययन **डॉ0 शिवम श्रीवास्तव**	81-90
16.	वर्तमान परिदृश्य में महिला सशक्तिकरण एवं शिक्षा **डॉ0 शुभ्रा श्रीवास्तव**	91-100
17.	भारत में महिलाओं की स्थिति एवं मानवाधिकार : एक समीक्षा डॉ0 सुनीता त्रिपाठी	101-108
18.	प्राचीन भारत में गुरू शिष्य परम्परा **नरेन्द्र सिंह**	109-112
19.	शैक्षिक समायोजन में माता–पिता का योगदान : एक विश्लेषण **राजेन्द्र कुमार राम**	113-116
20.	पितृ सत्तात्मक समाज व नारी की बदलती अस्मिता : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन **डॉ. वन्दना राव**	117-122
21.	मुस्लिम राजनीति की दिशा और दशा **अजय कुमार**	123-126
22.	मनरेगा का अनुसूचित जातियों पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय दृष्टि **डॉ. विमल कुमार लहरी**	127-134
23.	भारतीय दर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा **डॉ. आनन्द श्रीवास्तव**	135-146
24.	धर्म और शिक्षा **डॉ. अंशू त्रिपाठी**	147-152
25.	वनवासी क्षेत्र के किशोर विद्यार्थियों में शिक्षा और संस्कार : एक अध्ययन **डॉ. कंचन शर्मा**	153-158
26.	भारतीय नारी एवं यौन उत्पीड़न **डॉ0 सत्यप्रकाश गुप्त**	159-162

****